सर्वोदयकी राजनीति

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १६ सम्पादक : किशोरलाल मशरूवाला सह-सम्पादक : मगनभाओी देसाओी अंक ८

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० १९ अप्रैल, १९५२

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

मद्रासका प्रयोग

[पाठक जानते हैं कि कांग्रेस दो पीढ़ियोंसे भी ज्यादा समयसे संपूर्ण शराबबन्दीकी हामी रही है, और सन् १९३७ में प्रान्तोंके शासनकी बागडोर अुसके हाथमें आते ही अुसने अिस पर अमल करना भी शुरू कर दिया था। अुस समय मद्रासने श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्यके कुशल और दृढ़ नेतृत्वमें अेक जिलेमें यह प्रयोग शुरू किया था। सारे देशने अुत्सुकतासे अुस प्रयोगको देखा था। स्व० श्री महादेव देसाओीने अिस बारेमें ता० १२-३-'३८ के 'हरिजनसेवक' में 'शराबबन्दीकी प्रगति' नामसे एक लेख लिखा था। नीचेका हिस्सा वहींसे लिया गया है। अीश्वरकी कृपासे श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य फिरसे मद्रासके मुख्यमंत्री बने हैं। हमें आशा है कि अुनकी सावधान और अचूक दृष्टि तुरन्त अिस बातको देख लेगी कि मद्रास राज्यके शराबबन्दी काम पर शीघ्र ध्यान देनेकी जरूरत है। अिस संबंधमें वहां जो सड़ांध पैदा हुअी दिखाओी देती है, अुसे रोकनेकी तरफ भी अुन्हें तुरन्त ध्यान देना चाहिये। आशा है कि १५ साल पहले मद्रासने शराबबन्दीके क्षेत्रमें जो साहसभरा प्रयोग किया था, अुसका नीचे दिया गया बयान मद्रासको अपने महान अतीतकी याद दिलायेगा और अुसे अपनी अुतनी ही बड़ी वर्तमान जिम्मेदारीके प्रति जाग्रत करेगा।

१०-४-'५२ —म० देसाओी

पुनश्च—अूपरकी पंक्तियां लिखनेके बाद नीचेकी जो खुश-खबरी मिली, अुसकी तरफ मैं पाठकोंका ध्यान खींचना चाहता हूं। मद्रासके मुख्यमंत्रीका पद ग्रहण करनेके बाद तुरन्त श्री राजाजीने पत्र-प्रतिनिधियोंके साथकी अपनी बातचीतमें मद्रासकी शराबबंदी नीतिके बारेमें यह बात कही (दि हिन्दू, ११-४-'५२) :—

सवाल : क्या शराबबन्दीकी नीति पर सख्तीसे अमल किया जायगा? लोगोंका अैसा खयाल है कि वह संतोषप्रद ढंगसे काम नहीं कर रही है।

मुख्यमंत्री : आप अैसा क्यों कहते हैं? जहां तक मेरा संबंध है, मैं अुन लोगोंकी मौजूदा हालतसे बहुत सन्तुष्ट हूं, जो पहले शराबके आदी थे। हमें लोगोंकी हालतसे ही खास संबंध रखना चाहिये।

अेक रिपोर्टरने कहा : "शराबबन्दीने नये लोगोंको शराबका आदी बना दिया है।" श्री राजगोपालाचार्यने तुरन्त जवाब दिया : "यह कोरी कल्पना है। यह दूसरे लोगोंके दोषोंके बारेमें अतिशयोक्ति करना है।"

"क्या आपमें से कोअी शराबका आदी है?" श्री राजगोपालाचार्यने अेकत्रित पत्र-प्रतिनिधियोंसे पूछा। जवाबके लिअे रुके बिना अुन्होंने फिर पूछा : "क्या आजकी हालतमें आपमें से कोअी शराबका नया आदी बन सकता है? मैं आपसे अिस बारेमें व्यक्तिगत प्रमाण चाहता हूं। क्या शराब पाना आसान है?"

अिसका जवाब 'ना' में था।

श्री राजगोपालाचार्यने कहा, "तब यह सवाल मुझसे न पूछें। अगर आप मुझसे इस विषय पर बोलनेके लिअे कहेंगे, तो मैं सिद्धान्तकी चर्चामें पड़ जाअूंगा।"

अेक दो क्षण ठहरकर श्री राजगोपालाचार्यने कहा : "कितनी ही बातों पर फिरसे विचार करना होगा, खास करके अुनके शासन संबंधी पहलुओं पर—नीतियों पर अुतना विचार करनेकी जरूरत नहीं, जितना कि शासनतंत्र द्वारा अुन पर अमल करनेके पहलुओं पर।"

१४-४-'५२ —म० दे०]

सभी कांग्रेसी सरकारें पूर्ण शराबबंदीकी नीति पर चलनेके लिअे वचनबद्ध हैं। और अुन सबने अपने-अपने प्रान्तकी परि-स्थितियोंके अनुसार सच्चाओीके साथ अपने ढंग पर अिसके लिअे प्रयोग भी शुरू कर दिये हैं। मद्रास प्रान्तमें तो १ अक्तूबर १९३७ से ही यह प्रयोग जारी है और मद्रासके प्रधानमंत्रीकी ख्यातिके ही अनुसार सावधानी और संपूर्णताके साथ वह वहां चल रहा है। अिसका अमल डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट और डिस्ट्रिक्ट सुपरिण्टेण्डेण्ट ऑफ पुलिसके मातहत पुलिसके हाथोंमें है और अुनकी मददके लिअे अेक शराबबंदी अफसर और अेक स्पेशल डेवलपमेण्ट अफसर तैनात है। अिस प्रयोगके अभी तक जो परिणाम आये हैं, अुनका जिलेके कलेक्टर मि० अे० अेफ० डब्लू० डिक्सनने, जो पहले किसी भी प्रकार अिस प्रयोगके पक्षमें नहीं थे, अपनी बिलकुल ताजा रिपोर्टमें विस्तारसे अुल्लेख किया है। टाअिप किये हुअे सोलह फुलस्केप कागजोंकी अिस लम्बी रिपोर्टमें अुन्होंने बढ़ा-चढ़ा कर लिखा हो, सो बात बिलकुल नहीं है। ताड़के दरख्तोंसे मीठी ताड़ी निकालनेमें जो वृद्धि हुअी है, अुसका जिक्र करते हुअे अुन्होंने लिखा है कि अगर आवश्यक देखभाल न रखी गअी, तो यह साफ अंदेशा है कि मीठी ताड़ीकी जगह कहीं नशेकी ताड़ी न बनाअी जाने लगे। चोरी-चुपके गांजा पीनेके कुछ मामलोंका अुल्लेख करते हुअे कहा है कि गैर सरकारी यानी आम लोगोंकी मददके बिना चोरी-चुपके किये जानेवाले नशेको बिलकुल रोकना मुश्किल होगा; साथ ही, यह भी कहा है कि गैरकानूनी तरीकेसे शराब खींचने पर नियंत्रण रखा जा रहा है, फिर भी बहुत गुप्त रूपमें थोड़ा-बहुत वह जारी ही है। शराबकी जगह मेथिलेटेड स्पिरिट पीनेके थोड़े रुझानकी तरफ भी अुनका ध्यान गया है और मेडिकल अफसरसे अुन्होंने तामिल भाषामें अेक अैसी विज्ञप्ति निकालनेको कहा है, जिसमें स्पिरिट पीनेसे होनेवाले घातक परिणामोंका वर्णन हो। साथ ही पहलेके शराबियोंके, शामकी अपनी अुदासी दूर करनेके लिअे, जुअेका सहारा लेनेसे जुअेमें होनेवाली वृद्धिका भी अुल्लेख किया गया है। लेकिन कुल मिलाकर वे अिस परिणाम पर पहुंचे हैं कि "परिस्थितिमें

सामान्य रूपसे कोअी बिगाड़ हुअे बगैर जैसे-जैसे महीनेके बाद महीना गुजरता जाता है, वैसे-वैसे अिस प्रयोगकी सफलता निश्चित होती जाती है।"

यह सब तो हुआ शराबबन्दीकी योजनाके अमलका हाल। लेकिन लोगोंके जीवन पर अिसका क्या असर पड़ा, अिस विषयमें सभी तरफ अुन्हें निश्चित रूपसे सुधार दिखाअी दिया है। अिस बारेमें विविध जरियों तथा अपने खुदके निरीक्षणसे अुन्हें जो बहुतसी बातें मालूम हुअीं, अुनका कोअी छः पृष्ठोंमें अुन्होंने सार दिया है। अपनी खुदकी जांच-पड़तालसे वे जिस निश्चित परिणाम पर पहुंचे हैं, वह यह है:

"शराबबन्दीसे लोगोंकी रहन-सहन पर जो असर पड़ा है, अुस परसे तीन महीनेके अनुभवसे मैं कह सकता हूं कि शराबबन्दी अिस जिलेके गरीबोंके लिअे बड़ी लाभदायक साबित हो रही है। वे रोज कमाकर खानेवाले आदमी हैं। शराब-खोरीका खर्च बरदाश्त करना अुनके लिअे कठिन था। अिससे अुनकी छोटीसी आमदनी नशेमें ही अुड़ जाती थी और वे बेहाल रहते थे। न घरका खर्च चला सकते थे, न काफी खाना-कपड़ा ही जुटा सकते थे। अिससे वे पारिवारिक कलहसे भी दुःखी रहते थे। शराबबन्दीका हुक्म जारी होनेसे हजारों घरोंकी अवस्था सुधर गअी है, घरेलू झगड़े बन्द हो गये हैं, अुन्हें काफी भोजन मिलने लगा है और सूदखोरोंके पंजेसे भी अुनकी जान बच रही है। यह चार महीनेके थोड़ेसे समयमें हुआ है। अगर शराबबन्दीका कानून जारी रहा और सख्ती पहलेसे घटाअी न गअी, तो मैं आशा करता हूं कि अिस जिलेके किसानों और मजदूरोंकी अवस्थामें और अधिक तथा स्थायी सुधार होगा और अुनकी ठोस भलाअी होगी।"

अब हमें यह देखना चाहिये कि अिन सुपरिणामों पर खर्च कितना पड़ा है। बजटके अपने भाषणमें श्री राजगोपालाचार्यने कहा है कि, "१९३७-३८ के आर्थिक वर्षके अन्तिम छः महीनोंमें शराब-बन्दी पर होनेवाला कुल खर्च १३,१९,००० रु० बैठेगा। अिसमें १३ लाख तो आबकारीकी आमदनीका नुकसान है और ५१ हजार, जिलेके आबकारी-विभागके पहले कर्मचारियोंको घटानेसे होनेवाली ३२ हजारकी बचतको मिलाकर शराबबन्दीके लिअे अतिरिक्त पुलिस व स्पेशल अफसरोंकी नियुक्ति पर होनेवाला खर्च है।"

शराबबन्दीसे होनेवाले नैतिक और भौतिक परिणामोंके मुकाबलेमें भला अिस खर्चको कौन ज्यादा बतायेगा? फिर व्यक्तिगत लाभोंके अलावा अेक अुदाहरण अैसा भी मिलता है कि अेक मिलमें अिस प्रयोगके किये जाने पर अुसके २००० मजदूरों पर भी अिसका अच्छा नैतिक प्रभाव पड़ा है, जब कि शराबबन्दीसे पहले मजदूर न तो नियमित रूपसे काम पर आते थे और न ढंगसे काम ही करते थे और रातको बराबर लड़ाअी-झगड़ा हुआ करता था। अब वे नियमित रूपसे अीमानदारीके साथ काम करने लगे हैं, रातमें कोअी लड़ाअी-झगड़ा नहीं करते और मशीनोंकी भी कहीं अच्छी तरह सार-सम्हाल करने लगे हैं, "जिससे माल ज्यादा तैयार होने लगा है और खर्च घट गया है। जबसे शराबबन्दीका कानून जारी हुआ, माल वस्तुतः दूना तैयार होने लगा है। अिस कानूनसे खासकर मिलकी स्त्रियोंको बहुत फायदा हुआ है। पहले वे बीमार, गन्दी और फटेहाल रहती थीं। अब हरेक स्त्रीके पास दो-दो, तीन-तीन साड़ियां हैं और ५० फी सदी स्त्रियां रोज अपने कपड़े साफ करती हैं। अुनकी आर्थिक अवस्थामें भी सुधार हुआ है। अुन्होंने अपने पहलेके गिरवी रखे हुअे जेवर छुड़ा लिये हैं, अुनके रहनेके घरोंमें भी सुधार हुआ है और जहां अंधेरा रहता था वहां अब चिराग भी जलने लगे हैं।"

संयुक्त प्रांतकी सरकारने भी ठीक ढंगसे काम शुरू किया है और मद्रासके प्रयोगकी तरह अुसके प्रयोगमें भी कअी अैसी बातें हैं, जिनका कि दूसरे प्रांतोंमें अनुकरण किया जा सकता है।... अिस बात पर बहुत जोर देनेकी तो जरूरत ही नहीं कि विभिन्न प्रांतोंके आबकारी-मंत्रियोंको अेक-दूसरेके संपर्कमें रहकर हरअेक प्रांतकी प्रगति पर तुलनात्मक नजर रखते हुअे दूसरे प्रांतोंमें जिन अुपायोंसे सफलता मिली हो, अुन्हें अपने यहां भी अपनानेकी कोशिश करनी चाहिये।

अेक हानिकारक प्रस्ताव

बम्बअी राज्यके रेशनिंगवाले शहरी हिस्सोंको केन्द्रीय सरकार जो आर्थिक मदद देती थी, वह अुसने बन्द कर दी है। अिसलिअे बम्बअी सरकारको रेशनिंगके अनाजोंकी कीमत लगभग ५० प्रतिशत बढ़ानी पड़ी है। कुदरती तौर पर अिससे खास करके शहरोंके कम आमदनीवाले वर्गोंमें नाराजी पैदा हुअी है। अैसा मालूम होता है कि विरोधी राजनैतिक पार्टियां और वर्ग लोगोंकी अिस मुसीबतका फायदा अुठाकर अुन्हें सरकारके खिलाफ भड़काने लगे हैं। यह माना जा सकता है कि जहां किसी पार्टीकी सरकार द्वारा शासन चलानेकी प्रथा है, वहां अैसा ही होगा। लेकिन अिसकी भी कोअी हद होती है। अिस छोटेसे लेखमें मैं अिस आन्दोलनके अेक बुरे और नुकसानदेह पहलूकी तरफ पाठकोंका ध्यान खींचना चाहता हूं।

जैसा कि पाठक जानते हैं, समाजवादियों, परिगणित जाति-संघवालों और कुछ दूसरे लोगोंने यह राय जाहिर की है कि जरूरी हो तो सरकार शराबबन्दीकी नीति छोड़ सकती है और आबकारीकी आमदनीका अुपयोग मंगाये हुअे अनाजोंके भावोंमें राहत देनेमें कर सकती है। जो लोग शराबबन्दीके खिलाफ हैं और शराबकी तथा अुससे होनेवाली आमदनीकी हिमायत करते हैं, अुनके मुंहसे यह प्रस्ताव निकलता, तब तो समझमें आ सकता था। लेकिन अैसी बात नहीं है। जिन लोगोंका जिक्र अूपर किया गया है, वे निश्चित रूपसे यह कहते हैं कि हम शराबबन्दीके खिलाफ नहीं हैं। फिर भी मान लीजिये दलीलके लिअे हम आबकारीसे आमदनी हासिल करनेका प्रस्ताव मंजूर कर लें। लेकिन जिन गरीब मजदूरों और किसानोंके नाम पर हम यह दलील पेश करते हैं, अुन्हें क्या दरअसल अिससे मदद पहुंचती है? आबकारीकी आमदनी कौन देता है? क्या ज्यादातर ये ही लोग नहीं देते? और अिसके बदलेमें अुन्हें कोअी लाभ होगा? हरगिज नहीं। आबकारी-कर और शराबका बिल चुकाकर वे अपनेको और अपने परिवारोंको बरबाद करने लगेंगे और आर्थिक राहतसे मिलनेवाले अनाजोंको खरीदनेके पैसे भी अुनके पास नहीं बचेंगे। वे शराब-ताड़ी पर अपना पैसा बरबाद करेंगे, जैसा कि वे शराबबन्दीसे पहलेके दिनोंमें किया करते थे। अिसलिअे अनाजके भावोंमें आर्थिक राहत देनेके लिअे आबकारी-आमदनीका सुझाव रखना समझदारीकी बात नहीं होगी। शराबबन्दी अपने आपमें अेक स्पष्ट लाभ है। थोड़ीसी आर्थिक मददके रूपमें मिलनेवाले पैसेके मामूली लाभके बदलेमें अुसे छोड़ा नहीं जा सकता, न छोड़ा जाना चाहिये। यह भी याद रखना चाहिये कि अनाजोंकी कीमतें बढ़ानेसे कारखानोंके मजदूरोंको बढ़ी हुअी कीमतोंके हिसाबसे बढ़ा हुआ महंगाअी भत्ता मिलेगा। सरकार भी दूसरी तरहसे मदद देनेका कोअी अपना रास्ता निकाल सकती है। लेकिन शराबबन्दी जैसे पवित्र कार्यको अिस तरह दलबन्दीकी नीतिका भोग नहीं बनाना चाहिये। अगर अतिरिक्त आयकी जरूरत मालूम ही हो, तो अिसके लिअे दूसरे जरिये खोजे जा सकते हैं; लेकिन हमारे गरीब लोगोंको शराब पिलाकर सर्वनाशके रास्ते ले जाकर तो हरगिज नहीं।

१३-४-'५२ मगनभाअी देसाअी

(अंग्रेजीसे)

सर्वोदय यात्रा : सिंहावलोकन

३० जनवरीसे १२ फरवरी तक सर्वोदय पक्ष मनानेकी परिपाटी अब शुरू हो गयी है। अिस पक्षके दरमियान बापूके सर्वोदय तथा खादी-ग्रामोद्योगका संदेश देहातोंमें फैले, अिस कल्पनासे गत वर्ष केरल, तामिलनाड़, मध्यप्रदेश तथा बिहारमें कुछ टोलियां निकलीं। ३० जनवरीको देहातसे निकलकर १२ फ़रवरीको भरनेवाले सर्वोदय-मेलेके स्थान पर पहुंचनेका कार्यक्रम बनाया गया। रास्तेमें जो-जो देहात आते गये, अुनमें सफाअी, सूत्रयज्ञ, प्रार्थना, सूतांजलि आदि कार्यक्रम किये गये। ग्रामीण जनताके साथ मिलने-जुलनेके अलावा देहातोंसे समरस होनेकी दृष्टिसे यह अेक महत्त्वपूर्ण मौका था।

पिछले वर्षके अनुभवसे हमने पाया कि आज भी देहाती जनता तक खादी अेवं ग्रामोद्योगका संदेश पहुंचा नहीं है। जिन देहाती सज्जनोंने सर्वोदय टोलियोंके मार्फत वह सुना, अुनमें अेक प्रकारका अुत्साह जाग्रत हुआ तथा ग्रामोद्योगोंकी ओर अग्रसर होनेकी अुनकी तीव्र अिच्छा भी दृग्गोचर हुअी।

गत वर्षका यह अनुभव हमें अपने कामोंको आगे बढ़ानेके लिअे अुपयोगी साबित हुआ। अतः अिस वर्ष समूचे हिन्दुस्तानमें यह प्रयोग बड़े पैमाने पर करनेकी कल्पना संघके सदर पू० धीरेन्द्र भाअीने की। ३० जनवरीके पूर्व २ महीने तक प्रांतोंको परिपत्र आदिसे तथा आम जनताको अखबारोंमें अपीलों द्वारा प्रभावित किया गया। हरिजन, सर्वोदय, कताअी-मंडल-पत्रिका, लोकसेवक आदिमें लेख लिखे गये। संपादकीय टिप्पणियां भी लिखी गयीं। परिणाम यह हुआ कि जनता अिन कार्यक्रमोंको कार्यान्वित करनेके लिअे तैयार हो गयी।

अिस सर्वोदय पक्षमें क्या हुआ, कितनी टोलियां संगठित हुअीं; आदि जानकारी हमने संबंधित शाखाओं तथा विभागोंसे मंगवायी है। अब तक पूरी मालूमात तो हाथ नहीं लगी है, पर अैसा दीखता है कि समूचे भारतमें करीब २५० टोलियां सर्वोदय पक्षमें निकलीं और अुन्होंने करीब ३,००० देहातोंमें प्रचार किया तथा अंदाजन ३ लाख लोगोंने हमारे कार्यक्रमोंमें हिस्सा लिया।

अिस वक्तके सर्वोदय पक्षके दौरानमें सफाअी, सूत्रयज्ञ, प्रार्थना, तथा सूतांजलिके कार्यक्रमोंके अलावा भूदान-यज्ञका प्रचार भी था। अिधर करीब अेक वर्षसे पू० विनोबाजी भारतका पैदल दौरा करके भूस्वामियोंको अपनी अतिरिक्त जमीनें बेजमीन खेती-मजदूरोंको देकर 'आर्थिक-न्याय' स्थापित करनेकी सलाह दे रहे हैं। श्री धीरेन्द्रभाअीने पू० विनोबाजीके ही शब्दोंमें अेक "भूदान" संबंधी प्रवचन तैयार किया। यह प्रवचन सर्वोदय-टोलियोंने प्रार्थनाके बाद पढ़ा।

अब तक हमें मिले हुअे अहवालों परसे २०२ टोलियां बनीं, जिनका प्रांतवार ब्यौरा अिस प्रकार है:—

१. आंध्र	४
२. कर्नाटक	१६
३. तामिलनाड़	३३
४. केरल (तीनों विभाग)	३५
५. राजस्थान	११
६. बिहार	२६
७. हैदराबाद	१
८. शिवरामपल्ली	१
९. सौराष्ट्र	१
१०. गुजरात	२०
११. नागविदर्भ	२
१२. सेवाग्राम	१
१३. खादी सदन नरसिंगपुर, ढोली (बिहार)	१
१४. बंगाल	५०
कुल	२०२

अिन टोलियोंका विस्तृत अहवाल हम अलगसे अेक पुस्तिकाके रूपमें जल्द ही प्रकाशित कर रहे हैं। यह पुस्तिका रचनात्मक कार्यकर्ताओंके लिअे अेक अुपयोगी चीज होगी। अिसमें टोलियां जिस-जिस गांवमें गयीं, अुनकी मोटी जानकारी दी गयी है। यह कोअी आर्थिक निरीक्षण करनेवाला जत्था नहीं था। अिसलिअे अिस पुस्तिकामें कोअी अधिकृत या वैज्ञानिक चर्चा होगी, यह बात नहीं। पर दो-चार घंटेके अपने निवासमें अिन टोलियोंने देहातोंमें क्या देखा, अिसका रेखाचित्र आपको अिसमें जरूर मिलेगा।

सेवाग्राम, वर्धा
३-३-'५२

ना० रा० सोवनी
संचालक, कताअी मंडल विभाग
अ० भा० चरखा संघ

भूदान-यज्ञका सन्देश

शान्तिनिकेतनके प्रो० तन युन शानने राष्ट्रीय सप्ताहके मौके पर आचार्य विनोबाके भूदान-यज्ञके सम्बन्धमें नीचेका वक्तव्य निकाला है:

सारी जमीन धरतीकी है। चीनी और भारतीय परम्पराओंके अनुसार धरती सारे मनुष्योंकी ही नहीं, बल्कि सारे प्राणियोंकी माता है। अिसलिअे जमीन सबकी समान संपत्ति होनी चाहिये; वह किसीकी खानगी जायदाद नहीं होनी चाहिये। पुराने जमानेमें जमीन पर सब लोगोंका अधिकार था। सब लोग जहां चाहें वहां अुस पर आजादीसे घूम सकते थे और अुसका मनचाहा अुपयोग कर सकते थे। यह हालत बादमें बदल गअी। अिसका कारण बहुत करके मनुष्यका स्वार्थ या लालच था, जिसे रसेलने अधिकारकी भूख कहा है, न कि मार्क्सका अितिहासकी भौतिकवादी कल्पनाका सिद्धान्त। लोगोंने धीरे-धीरे जमीनको खानगी जायदादके रूपमें हड़प लिया। अिससे मानव-समाजमें अजीब हालत पैदा हो गअी। किसीके पास जमीन है, किसीके पास नहीं। आखिरकार मुट्ठी भर लोग जमींदार बन गये और बहुतसे लोग बेजमीन हो गये। अिससे दुनियामें काफी मुसीबतें पैदा हुअीं। आज यह दुनियाकी सबसे गंभीर समस्या बन गअी है, जिसे तुरन्त हल करनेकी जरूरत है।

लेकिन अिस अत्यन्त गंभीर और कठिन समस्याको तुरन्त कैसे हल किया जाय? अिसके तीन मुख्य रास्ते हो सकते हैं। पहला, हिंसक क्रान्ति द्वारा; जैसा कि सोवियत रूसमें किया गया। दूसरा, कानूनके जरिये, जो दुनियाके बहुतसे देशों द्वारा सोचा जा रहा है। तीसरा, स्वेच्छापूर्वक त्यागके द्वारा — जिसे महात्मा गांधीके महान शिष्य और सहयोगी आचार्य विनोबाने नया आन्दोलन कहा है। बेशक, पहला रास्ता सबसे छोटा और सबसे जल्दीका है। लेकिन वह सबसे ज्यादा भयंकर और क्रूर है। वह हमेशा खून-खच्चर और पापसे भरा होता है। दूसरा रास्ता सलामतीवाला और शान्तिपूर्ण है; लेकिन वह लम्बा, टेढ़ा-मेड़ा और रुकावटोंसे भरा होता है। तीसरा रास्ता सबसे अच्छा, सबसे सलामत और सबसे सीधा है। वह सभीको केवल सुखी ही बनाता है, किसीको दुःख नहीं पहुंचाता। अगर विनोबाका यह नया आन्दोलन सफल हुआ, तो वह जमीन देनेवाले और लेनेवाले दोनोंके लिअे आशीर्वादरूप सिद्ध होगा। मेरी आशा, प्रार्थना और विश्वास है कि वह जरूर सफल होगा। भारत दुनियाके सामने नफरत और हिंसासे दूर रहनेवाली शान्तिपूर्ण क्रान्तिका दूसरा महान अुदाहरण पेश करेगा, और श्री आचार्य विनोबा न सिर्फ भारतीय राष्ट्रके, बल्कि सारी मानव-जातिके दूसरे महात्माके रूपमें पूजे जायंगे।

(अंग्रेजीसे)

हरिजनसेवक

१९ अप्रैल १९५२

सर्वोदयकी राजनीति

मुझे यह जानकर कष्ट हुआ कि कअी मित्रोंने मेरा "कहानी और अुसका बोध" (हरिजनसेवक, ता० २९ मार्च '५२) लेख पढ़कर अैसा अर्थ निकाला है कि अुसमें मैंने श्री शंकरराव देवके अुसी अंकमें प्रगट किये हुअे विचारोंका विरोध किया है। यह कुछ गलतसमझी है। यदि मेरा श्री शंकरराव देवके विचारोंसे बिलकुल विरोध ही होता, तो बजाय अिसके कि मैं अुनका लेख छापता और अुसी अंकमें अुसका विरोध भी करता, अुनका लेख बिलकुल न छापना ही पसंद करता। अुनके जैसे सम्मान्य साथीके साथ महज चर्चाके लिअे ही 'हरिजन' पत्रका अुपयोग करना मैं पसन्द न करता।

मैं मानता हूं कि रचनात्मक कार्यकर्ताओंमें अिस विषय पर कोअी मतभेद नहीं कि वे राजनीतिसे बिलकुल लापरवाह या विमुख नहीं रह सकते। लेकिन अुनकी राजनीतिका स्पष्ट स्वरूप क्या हो, अिस पर अभी हमारे विचारोंका स्वरूप कुछ अस्पष्ट ही है। तरह-तरहके अनुभवों, आदर्शों, और विचारधाराओंका हम पर प्रभाव है। साथमें गांधीजीके संस्कार और विचार तो हमारे दिल पर हैं ही। गांधीजीकी विचारधाराके बारेमें भी किसी पर अुनकी शिक्षा और आचारोंके किसी अेक पहलूका ज्यादा असर है, किसी पर दूसरेका। अिसलिअे कोअी आश्चर्य नहीं कि हमारे विचारोंमें अेकदम समानता नहीं है। मसलन्, श्री काका कालेलकरकी कांग्रेस पक्षके प्रति वफादारी है। कृपलानीजीको बगावती (प्रोटेस्टेन्ट) कांग्रेसमैन कह सकते हैं। श्री शंकरराव देवके विचार शायद समाजवादियोंसे अधिक मेल खानेवाले हैं। श्री कुमारप्पाकी भाषा कअी बार साम्यवादियोंके नजदीक पहुंच जाती है। श्री गद्रे और कअी तरुणोंकी मनोवृत्ति कुछ न कुछ गरम कार्यक्रम हाथमें लेना चाहती है। विनोबाजी सब पक्षोंको किसी सर्वमान्य कार्यक्रम द्वारा अेक जगह लानेका और राज्यकी नीति और व्यवहारों पर बाहरसे लोकमत और स्वयंस्फूरित कामों द्वारा असर पहुंचानेका प्रयत्न करते हैं। विनोबाजीके विचारोंसे मेरा बहुत मेल खाता है, फिर भी मेरा काम सभीके विचारोंको समझनेका प्रयत्न करना और सबमें से कोअी जनहितकारी विचारधारा और कार्यप्रणाली पैदा हो सकती हो, तो अुसे खोजनेका है। मुझे किसी पक्षमें जानेकी अिच्छा नहीं, झगड़नेकी अिच्छा नहीं, नया पक्ष बनानेकी अिच्छा नहीं। कोअी बनाना चाहता है और अुससे जनताको कुछ लाभ पहुंच सकता है, तो अुससे मेरा विरोध भी नहीं। अिस दृष्टिसे मेरे विचार भिन्न-भिन्न कार्यकर्ताओं और कार्यक्रमोंको सत्य और अहिंसाकी हदमें मदद पहुंचाने और जनताके विचारोंको स्पष्ट करनेके हेतुसे रखे जाते हैं। वे अेक तरहका जाहिरा मनन (loud thinking) हैं।

सर्वोदय समाजका कोअी राजकीय पक्ष नहीं है। अिसी कारण मैंने अपने लेखमें भी साफ कहा है कि "सेवकों (यानी सर्वोदय समाजके सदस्यों) के पास अपने-अपने राजनीतिक पक्ष या विधानसभाके सदस्योंकी हैसियतमें अूपरसे असमानताका निवारण करनेके लिअे और समृद्धिका निर्माण करनेके लिअे अपने अुपाय और अपने कार्यक्रम हो सकते हैं, और रह सकते हैं।"

अगर मुख्य मुख्य रचनात्मक कार्यकर्ता किसी पक्की राजकीय विचारधारा और सिद्धान्तों पर अेकराय हो सकें और अुसका पूरा ढांचा बना सकें, तो मुझे खुशी होगी।

वर्धा, ९-४-'५२ कि० घ० मशरूवाला

टिप्पणियां

राष्ट्रपतिका चुनाव

मैं यह कबूल करता हूं कि जिन राजनैतिक या दूसरे हेतुओंने कम्युनिस्ट नेताको राष्ट्रपतिके चुनावमें डॉ० राजेन्द्रप्रसादके खिलाफ प्रो० के० टी० शाहको खड़ा करनेकी प्रेरणा दी, अुन्हें मैं समझ नहीं पा रहा हूं। अगर कम्युनिस्ट या सारी गैर-कांग्रेसी पार्टियां किसी प्रतिस्पर्धीको खड़ा ही करना चाहती थीं, तो अुन्हें कोअी अैसा अुम्मीदवार खोजना चाहिये था, जिसके बारेमें आम जनताको लगता कि, "कोअी हर्ज नहीं, ये महाशय भी अुतने ही महान हैं; हमें अिसकी परवाह नहीं कि धारासभाके सदस्य हमारे लिअे अिनमें से किसे राष्ट्रपति चुनते हैं।" प्रो० शाह जानते हैं कि मेरे दिलमें अुनके लिअे कितना प्रेम और आदर है। अिसलिअे वे मुझे गलत नहीं समझेंगे, जब अेक मित्रके नाते मैं यह कहता हूं कि अुन्होंने अिस चुनावमें खड़े होनेके लालचको ठुकरा दिया होता तो अच्छा होता।

चूंकि भारतीय गणतंत्रका राष्ट्रपति अिंग्लैण्डके राजाकी तरह राज्यका केवल नाममात्रका अध्यक्ष है, अुसके हाथमें अमेरिकाके प्रेसीडेण्टकी तरह राज्यकी सर्वोच्च सत्ता नहीं सौंपी जाती, अिसलिअे वांछनीय यही है कि सर्वानुमतिसे अुसका नाम पेश किया जाय। भारतीय संघके अध्यक्ष और केन्द्रीय सरकारके अध्यक्षके बीच फर्क किया जाना चाहिये। मैं नहीं जानता कि डॉ० राजेन्द्रप्रसादका नाम जाहिर करनेसे पहले कांग्रेसने दूसरी पार्टियोंके नेताओंसे सलाह-मशविरा किया था या नहीं। मालूम होता है अुसने अैसा नहीं किया। अगर यह सच है, तो जैसे कांग्रेसने आम चुनावोंके बाद दूसरे कुछ गलत अुदाहरण पेश किये हैं, वैसा ही यह भी अेक है। अगर कांग्रेसने अिस बारेमें दूसरी पार्टियोंसे सलाह-मशविरा किया होता, तो मेरा खयाल है कि यह भद्दी होड़ टाली जा सकती थी। मेरा यह विश्वास नहीं है कि लोकशाहीका मूल तत्त्व होड़वाले चुनावमें ही है।

जो भी हो, मैं आशा करता हूं कि धारासभाके सदस्य राष्ट्रपतिके चुनावको दलबन्दीकी नीतिका विषय नहीं बनायेंगे और अपने मत देते समय अिस बातका खयाल रखेंगे कि आम जनता अिस मामलेको किस दृष्टिसे देखेगी।

वर्धा, ११-४-'५२ कि० घ० म०

(अंग्रेजीसे)

पत्रोंकी ग्राहकसंख्या

ता० १५-४-'५२ तक तीनों पत्रोंके ग्राहक इस प्रकार हैं:

हरिजन	३८७८
हरिजनबन्धु	६३७०
हरिजनसेवक	३२३९
कुल	१३४८७

१ मार्चसे १५ अप्रैल तक तीनों पत्रोंके ग्राहकोंकी कुल बढ़ती ४४८७ हुअी है।

अिस संबंधमें पाठकोंको यह सूचित कर देना जरूरी है कि हर महीने कुछ पुराने ग्राहक नया चन्दा जमा न करा सकनेके कारण बन्द हो जाते हैं। जो लोग चन्दा पूरा हो जानेकी पूर्व-सूचना कर देने पर भी समय रहते पत्र बन्द करनेकी सूचना आफिसको नहीं देते, अुन्हें पत्रका एक अंक वी० पी० से भेजा जाता है। अनुभव यह है कि अिस तरह वी० पी० से भेजे जानेवाले अंकोंका लगभग अेकतिहाअी हिस्सा ग्राहकों द्वारा स्वीकार न किये जानेके कारण वापस आ जाता है। अिस तरह अूपर बताअी गअी ग्राहकोंकी कुल बढ़ती दिये गये आंकड़ोंसे कुछ ज्यादा या कम साबित हो सकती है, क्योंकि वह रास्तेमें चल रही वी० पी० पार्सलोंकी स्वीकार की जानेवाली संख्या पर निर्भर करती है।

जी० देसाअी

राम-जन्म

रोज सूरज अुगता है और अुसका अस्त भी होता है। यह अेक छोटीसी घटना है। लेकिन मनुष्यको वह स्मरण कराती है कि अुसके जीवनका अेक अेक दिन भूतकालमें जा रहा है। सूर्यनारायण, जो हमारे सब कामोंका साक्षी है, हमारे जीवनका नाप भी लेता है। अिसलिअे अनुभवी पुरुषोंने सिखाया है कि सुबह और शाम अंतरमुख होना चाहिये और अपना परीक्षण करना चाहिये। वैसा करनेसे जीवनमें कहीं भी अैसी बात नहीं होगी कि हमें पछताना पड़े। पश्चात्ताप करनेका मौका आये, तो पश्चात्ताप करना भी चाहिये। लेकिन कोशिश अैसी होनी चाहिये कि वैसा मौका ही न आये। मैंने अिसलिअे अेक नया ही शब्द बनाया है 'पूर्वताप', यानी पहले ही अपनेको तपा लेना, सावधान होकर अपनी हरअेक कृतिको परखना। पूर्वतापसे जीवन प्रति दिन सुधरता है और पश्चात्तापका प्रसंग नहीं आता। भगवानकी योजनामें वैसे पश्चात्तापके लिअे अवसर ही नहीं है। मनुष्य अगर पहले ही अपनेको तपा ले और सीधी राह चले, तो पश्चात्तापका सवाल ही क्यों पैदा हो?

सूर्योदय रोजकी मामूली घटना है। लेकिन आज तो राम-जन्मका दिन है। आज हमें राममय हो जाना है। अिस देशके करोड़ों लोग आज राम-जन्मका आनंद लूटते हैं। अपनी सारी बुराअियां और अपने सारे दुःख भूलकर अिस अुत्सवमें अेकरूप हो जाते हैं। कहा जाता है कि रामका जन्म अयोध्यामें हुआ था। लेकिन हमारे रामका जन्म हिन्दुस्तानके हरअेक देहातमें होता है। अयोध्या भी हमारे हृदयमें है। जो हृदय अहिंसामय हुआ, वही अयोध्या है। और वहीं रामजीका जन्म होता है।

गत वर्ष मैं रामनवमीके रोज रामजीका आशीर्वाद लेकर तेलंगानाकी यात्राके लिअे निकला था। अेक कठिन काम मेरे सामने था। पहले कुछ सोचे बिना अुसे अुठाना पड़ा। और परमेश्वरकी कैसी कृपा कि आज अुसमें से अेक नयी शक्तिका आविर्भाव हो रहा है। मेरे लिअे यह रामका जन्म हुआ है। जिस तरह हिन्दुस्तानके लोगोंने अिस भूदान-यज्ञमें हिस्सा लिया है, वह अिस विषम कलिकालमें अेक अद्भुत घटना है। जहां अेक ओर हमारी दृष्टि अत्यंत ही संकुचित हो गअी है, अपने कुटुंबके बाहर हम नहीं सोचते, अिंद्रियोंके गुलाम बन गये हैं, वहां दूसरी ओर दरिद्रनारायणके लिअे अेक शख्स जमीन मांगता है, तो लोग अुसे जमीन देते ही चले जाते हैं। यह राम-जन्म नहीं तो और क्या है? अेक बरसभर नित्य मेरी आंखोंके सामने यह राम-जन्म होता रहा। भूदान-यज्ञमें सब लोगोंने हविर्भाग दिया है। हिन्दुओंने दिया, मुसलमानोंने दिया, हरिजनों तकने दिया। स्त्रियां, जो खुद निराधार रहती हैं, अुन्होंने भी दिया। कुछ लोगोंने तो अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया। यह रामजीकी कृपाके बिना कैसे हो सकता था?

प्यारे भाअियो, आज मैं अधिक नहीं कहना चाहता। आज राम प्रभुसे मेरी यही प्रार्थना है कि जब तक वह मुझे अिस शरीरमें रखना चाहे, मुझसे निरन्तर सेवा ले। मेरी सेवा भगवानको समर्पण करने योग्य हो। मैं जानता हूं कि वह तभी वैसी हो सकेगी, जब अुसे अहंकारका स्पर्श न होगा। अिसलिअे मेरी प्रार्थना है कि रामजी मुझे अहंकारसे खाली करें। आप सबसे मेरी विनय है कि आप लोग भी मेरे लिअे अैसी प्रार्थना करें।*

* चितबड़ा गांव (जि० बलिया, अु० प्रदेश) में रामनवमीके दिन दिया हुआ विनोबाजीका प्रार्थना-प्रवचन।

सहयोग और सर्वोदय

[श्री मगनभाअी देसाअीने अहमदाबाद रेडियोसे ता० ४-३-'५२ को जो भाषण दिया था, वह अहमदाबाद रेडियोकी अिजाजतसे यहां दिया जाता है।]

यह विचार हमारे देशमें धीरे-धीरे जड़ पकड़ता जाता है कि सर्वोदयका आदर्श ही भारतके लिअे सच्चा आदर्श है, और यही सबसे अुत्तम भी है। हम तो यह भी दावा करना चाहते हैं कि सर्वोदय सारे जगतके लिअे—अुसके सारे देशोंके लिअे अच्छा है। क्योंकि सर्वोदय मानव-परिवारका स्वाभाविक आदर्श है। यह आदर्श किसी खास राष्ट्र, जाति, देश या समयके लिअे नहीं विचारा गया है। गांधीजीने हमें बताया है कि मानव-समाजका सनातन आदर्श ही सर्वोदय है। दूसरे देश यह मानें या न मानें, लेकिन भारतके लिअे तो हम अिसे मानते हैं और अिस पर अमल करना चाहते हैं।

सर्वोदय यानी सबका भला। सबका भला हो, किसीका बुरा मत सोचो, यह भावना हमारे देशकी संस्कृति जितनी ही पुरानी है। सर्वोदय हमारे लिअे नअी चीज है, अैसा नहीं कहा जा सकता। पुराने समयसे यह भावना हमारे देशमें समाजके सामने रखी जाती रही है। अिसके अुत्तम अुदाहरणके रूपमें हमारा यह प्रसिद्ध आशीर्वचन ही देखिये:

"सर्वेऽपि सुखिनः सन्तु,
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु,
मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात्॥"

(सभी सुखी हों, सब निरामय-नीरोग रहें, सबका भला हो, कोअी भी दुःखी न हो।)

अिस छोटेसे सुन्दर श्लोकमें सर्वोदयकी संपूर्ण भावना व्यक्त होती है। सबके सुखमें, सबके भलेमें, सबके लाभमें हमारा सुख, हमारा भला, हमारा सच्चा लाभ है। यह समझकर जीवन बिताना चाहिये।

यह चीज सत्यकी तरह कुदरती है। हरअेक अपनी अलग खिचड़ी पकावे, तो काम चल नहीं सकता। अैसा करना मनुष्यके स्वभावमें ही नहीं है। परमेश्वरने मनुष्यको अैसा बनाया है कि वह समाजमें सबके साथ रहे, तो ही सुखी हो सकता है। यह अुसका स्वभाव ही है। आपसमें अेक-दूसरेका विचार किये बिना मनुष्य रह ही नहीं सकता। अिसीमें अुसे जीवनका आनन्द मिलता है। और अैसा न करे तो मनुष्यकी गाड़ी आगे नहीं चल सकती। आप किसी भी बातको लें। हमारे किसी भी कामको देखें। कअी लोग अुसके साधनेमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूपसे मदद करते हैं, सहयोग देते हैं, अपने-अपने स्थानसे अुसकी सिद्धिमें हाथ बंटाते हैं। अिसी कारणसे समाजमें हमारे काम होते हैं। हमारी अिस बातचीतको ही लीजिये। हमें शायद अैसा लगे कि यहां रेडियो पर बैठा हुआ मैं बोल रहा हूं और आप घर बैठे हुअे सुन रहे हैं। लेकिन यह सोचिये कि कितने लोगोंका सहयोग होनेसे यह सादा-सा काम होता है। यह मशीन न हो तो? यह मशीन किसने बनाअी? कहांसे आअी? अिस मकानमें वह लगाअी गअी। मैं अिसका अुपयोग कर सकूं, अिसके लिअे, अिसी वक्त अनेक मित्र रेडियो-घरमें खड़े पांव काम कर रहे हैं। बिजली घरवाले बिजली पहुंचाते हैं। अजी, कितनी बड़ी तैयारी हजारों मनुष्योंने सहयोग और योजना-पूर्वक की, तब कहीं हमारी यह बातचीत संभव हो सकी है। छोटेसे लेकर बड़ेसे बड़े कामकी भी जांच करें, तो पता चलेगा कि अुसे करनेके लिअे कितने ही लोगोंका साथ, सहयोग और प्रत्यक्ष

या परोक्ष मदद आगे-पीछे रहती है। तभी वह हो सकता है। सब लोगोंको अपना भला करना हो, तो अुसका यही अेक रास्ता है। क्योंकि सहयोगके बिना अिस दुनियामें कुछ हो ही नहीं सकता।

अैसे सहयोगका अुत्तम अुदाहरण हमारे शरीरके संबंधमें वह प्रसिद्ध कहानी है, जिसमें बताया गया है कि हाथ, पांव, आंख, दांत, जीभ वगैरा पेट पर नाराज हुअे। अुससे अीर्ष्या करने लगे कि हम तो काम करते करते मर जाते हैं और पेट बैठे-बैठे खाता रहता है। न वह हिलता है, न चलता है, न चबाता है, न निगलता है। अरे, खुद खाता भी तो नहीं! हाथ खिलाये तब कहीं खाता है। अिसलिअे अिन सब अंगोंने विचार किया कि हम अपना सारा काम बन्द कर दें। आंख, कान वगैराने अपना-अपना काम बन्द करके पेटके साथ असहयोग किया। नतीजा क्या हुआ? कुछ ही दिनोंमें सबने यह समझ लिया कि अैसा करनेसे पेट ही नहीं, बल्कि वे खुद भी सब भूखों मर रहे हैं। पेट भी अपने हिस्सेका काम करता ही था; वह खुराक पचाकर सबके लिअे तैयार करता था।

यह बात हमारे समाजमें सब कामोंको लागू होती है। सबके सहयोगसे समाज चलता है। यह सहयोग प्रेम और बुद्धिसे देना चाहिये। लेकिन अैसा होते देखा नहीं जाता। जितना जरूरी है, अुतना होता नहीं। जहां-जहां जैसा चाहिये, वहां वैसा होता नहीं। मानवसमाजके दुःखका कारण अिस कमीमें, अिस दोषमें छिपा हुआ है। अुदाहरणके लिअे हमारा घर ही लीजिये। घरके छोटे-बड़े सब आपसमें प्रेमसे रहते हैं। हरअेक यथाशक्ति घरमें काम करता है। छोटोंसे काम न हो या वे न करें, तो बड़े अुनके लिअे प्रेमसे कर देते हैं। किसी बातकी अुन्हें तकलीफ नहीं होने देते। हमारे घरोंमें अधिकतर बुद्धि और प्रेमसे सहयोग होता है।

परंतु हम जो धन्धा करते हैं अुसमें? अुसमें घरके जैसा भाव नहीं रहता। वहां ज्यादातर स्वार्थकी खींचतान पाअी जाती है। वहां सेठ और मजदूर या अधिकारी और मददनीश जैसे दो भाग पड़े हुअे देखे जाते हैं। और अुसमें फिर यह भेद पैदा हो जाता है कि अेकका हित दूसरेका हित नहीं होता, और दूसरेका हित अपना हित नहीं होता। सेठकी नजर अिसी बात पर रहती है कि किस तरह मजदूरोंसे ज्यादासे ज्यादा काम लूं और अुन्हें कमसे कम मेहनताना दूं। मजदूर भी बदलेमें अैसा ही समझता है। वह भी यही सोचता है कि किस तरह कमसे कम काम करूं और ज्यादासे ज्यादा मजदूरी लूं। समाजके व्यवहारोंमें हर जगह अैसे दो भाग पड़ जाते हैं। अिस कारणसे सर्वोदयकी सिद्धिके लिअे जो सहयोग मिलना चाहिये, वह पूरी तरह नहीं मिलता; और सच कहा जाय तो अुतनी हद तक सबको नुकसान होता है। लेकिन वह प्रत्यक्ष दिखाअी नहीं देता। किसीको दिखाअी देनेवाला लाभ होता है, तो अुसे वह सच्चा लाभ मानकर चलता है। मजदूर कम काम करके यह मानता है कि अिससे अुसे कुछ लाभ हो गया। सेठ चालाकीसे मजदूरकी मजदूरीमें से कुछ काट कर या मालमें मिलावट करके अैसा मानता है कि अुसे फायदा हुआ। हर जगह अैसा ही चलता है।

अब देखिये कि दरअसल हुआ क्या? कोअी धंधा चलता क्यों है? अिसलिअे कि समाजको अुसकी जरूरत है, समाजके लिअे वह अुपयोगी है। लेकिन वह धंधा करनेवाले विभिन्न अंग या वर्ग यदि आपसमें मिल-जुलकर समझसे न चलें, तो वह धंधा ठीक तरहसे नहीं चलेगा। अुसका अुत्पादन घटेगा। अुतना नुकसान अेकन्दर सारे समाजको होगा। अुस धंधेसे मिलनेवाला काम मात्रामें कम होगा। अुस हद तक देशकी संपत्ति भी घटेगी ही। परंतु धंधा करनेवालोंकी यह दृष्टि नहीं रहती। और काममें खींचतान और झगड़ा चला करता है। अगर हम सर्वोदयका रहस्य समझ लें, तो तुरन्त यह समझ सकेंगे कि अिस तरह आपसमें हमें असहयोग नहीं करना चाहिये। अिस चीजको हम घरमें या कुटुम्बमें समझते हैं। कोअी झगड़ा पैदा हो, तो अुसे मिटा देते हैं और कामको बिगड़ने नहीं देते। सर्वोदय और सहयोगका सिद्धान्त कहता है कि अिसी तरह हमें बाहरके दूसरे कामोंमें भी व्यवहार करना चाहिये।

आजके जमानेमें अलग-अलग धंधोंमें काम करनेवाले मजदूरों और सेवकोंके संघ बनाये जाते हैं। अुनका अुद्देश्य यह होता है कि अुनके जरिये मजदूर संगठित होकर अपने हितोंकी रक्षा कर सकें। अिस तरहके संगठन बननेमें कोअी दोष नहीं है। लेकिन अिसमें अेक बात हमें नहीं भूलना चाहिये। वह यह कि अैसे संगठनोंको समाजके साधारण हितकी रक्षा करते हुअे और अुसकी अुपेक्षा न करते हुअे अपने विशेष हितकी रक्षा करनी चाहिये। मालिकों और मजदूरों दोनोंके संगठनोंके लिअे यही नियम है। किसी भी संघ या संगठनको समाजके व्यापक हितका ध्यान रखकर ही काम करना चाहिये, वर्ना वह समाज-विरोधी समझा जायगा। और समाज-विरोधी तो कोअी हो ही नहीं सकता। अिसलिअे अुत्तम मार्ग यह है कि सबको मिलकर आपसी सहयोगसे समाज-हितके लिअे अच्छेसे अच्छा काम करनेका ध्यान रखना चाहिये। अिससे समाजको लाभ होगा, क्योंकि अुसे अुत्तम काम मिलेगा। और अुस कामको करनेवाले लोग भी अिसीमें से अपना ज्यादासे ज्यादा फायदा कर सकेंगे। खींचतान, सहयोगके अभाव, कामचोरपन, मजदूरों या सेवकोंके शोषण, मालमें मिलावट, नफाखोरी वगैरासे झगड़े और वैर-द्वेषका वातावरण पैदा होता है। और अुससे अेकन्दर किसीका भी फायदा नहीं होता।

फिर भी देखते हैं कि झगड़ेके मौके आ ही जाते हैं और अुन्हें निबटाना पड़ता है। अुनके लिअे अब सरकारी अदालतें खड़ी होने लगी हैं। जिस तरह पैसे-टके, जमीन वगैराके झगड़े निबटानेके लिअे सरकारी अदालतें हैं, अुसी तरह अुद्योग-धंधोंसे संबंध रखनेवाले झगड़े निबटानेके लिअे अब अुद्योग-अदालतें शुरू हुअी हैं। अिस संबंधमें कानून बनने लगे हैं। झगड़े हों तो अुन्हें मिटानेके लिअे राज्यको यह रास्ता अपनाना चाहिये। लेकिन यहां सहयोगकी भावना यह कहती है कि आपसमें समझौता करके या पंच द्वारा झगड़ोंका निबटारा हो सके तो अच्छा। अदालतका सहारा लाचार हो जाने पर ही लेना चाहिये। झगड़ेके मौके ही पैदा न हों और सहयोगसे काम-काज चलता रहे, यह सबसे सुन्दर चीज होगी। लेकिन अगर झगड़े पैदा हो जायं, तो बेहतर यही होगा कि दोनों पक्ष समझकर आपसमें अुन्हें निबटानेका प्रयत्न करें। अिसके लिअे सर्वोदयकी प्रेरणासे चलना चाहिये। सबका सब खानेकी वृत्ति छोड़कर सबके लाभमें हमें जो लाभ हो, अुसीमें संतोष और आनन्द मानना चाहिये। अैसा हो तभी समाजमें सुख और शान्ति बनी रह सकती है।

अन्तमें अेक बात और कह देना चाहता हूं। वह यह कि सहयोग दुधारी तलवार है। वह तो अेक साधन है। अच्छे काम और बुरे काम दोनोंके लिअे वह जरूरी साधन है। चोर-डाकू और लुटेरे भी आपसमें सहयोग न करें, तो अुनका धन्धा चल नहीं सकता। लेकिन वह धंधा सर्वोदयके लिअे नहीं है। अैसे धन्धे समाजका नाश करनेवाले हैं। अिसलिअे अैसे धंधोंमें सहयोग नहीं परंतु असहयोग करना हमारा धर्म है। तभी सर्वोदयकी रक्षा हो सकती है। अिसलिअे जो काम समाजको नुकसान पहुंचानेवाले

हों, अुसका नाश करनेवाले हों, अुनमें सहयोग नहीं बल्कि असहयोग करना ही सच्चा सहयोग है। क्योंकि अैसा करनेसे ही सर्वोदय सध सकता है। यह बात भी याद रखनी चाहिये, क्योंकि आजकी दुनियामें कअी अैसे भी धन्धे पैदा हो जाते हैं, जो समाजके लिअे गैरजरूरी या नुकसानदेह हैं, लेकिन जिनमें कुछ लोग खूब नफा कमाते हैं। अैसे कामोंको समाज-द्रोही मानना चाहिये और अुनमें सहयोग नहीं करना चाहिये। सहयोग सर्वोदय साधनेके लिअे होना चाहिये। अैसा सहयोग करना हरअेक नागरिकका फर्ज है। अिसीमें वह अपना भी सच्चा लाभ माने। अिसीमें अुसकी सच्ची नागरिकता है। अिस दृष्टिसे हमारे अुद्योग-धन्धे और काम-काज चलें, तो ही सामाजिक सुख-शान्तिकी स्थापना हो सकती है। सर्वोदयके रास्ते जाना चाहनेवाले भारतमें अिसी दृष्टिसे सारी व्यवस्था होनी चाहिये।

अहमदाबाद, २-४-'५२
(गुजरातीसे)

मगनभाअी देसाअी

विनोबाकी अुत्तर प्रदेश यात्रा — १

२४ नवम्बरको हमने दिल्ली छोड़ी। तबसे करीब २४-२५ फरवरी तकका काल भूदानकी दृष्टिसे कसौटीका काल मानना चाहिये। २४ नवम्बरको लोगोंने चुनावके फार्म भरे और २४ फरवरी तक चुनाव तथा गिनती आदिका काम चलता रहा। जगह-जगहसे सुझाव आये कि कुछ दिन यात्रा बंद रखी जाय और चुनावके बाद ही शुरू की जाय। कमसे कम मतदानके दिनोंमें तो यात्रा स्थगित ही रहे, अैसा सुझाव तो नजदीकके साथियोंका भी था। पर विनोबा राजी नहीं हुअे। अुन्होंने कहा कि जब मृत्यु मेरे पीछे प्रतिक्षण दौड़ी आ रही है, तब मैं कैसे रुक सकता हूं? कार्यकर्ता बीच-बीचमें चुनावके कामसे जाते-आते रहे। कभी-कभी तो हमारा दल लगभग अकेला ही रह जाता, पर यात्रा रुकी नहीं।

कार्यकर्ता जब नहीं रहे, तब भी जनताके अुत्साहमें कोअी कमी नहीं आयी। जहां-जहां विनोबाजी गये, हजारोंकी तादादमें अिर्द-गिर्दके गांवोंसे लोग जमा होते थे। लोगोंके दिलोंमें प्रेम और आशा समाते ही नहीं थे। दस बजे तक विनोबाजी पड़ाव पर पहुंचते, तबसे लोगोंका आना शुरू होता, और प्रार्थना-प्रवचन आदि कार्यक्रम पूरा करके ही वे लौटते। शहर हो या देहात, विनोबाजी पूरा अेक दिन देते। देहातोंमें वे दरिद्रनारायणके दर्शन करते। शहरोंमें वे अपेक्षा करते अिस दरिद्रनारायणकी सेवाके लिअे कुछ सेवक पानेकी। देहातमें भक्तजन, तो शहरोंमें सेवकगण। अैसा दोहरा लाभ वे देखते। शहरोंमें थोड़े लोग ज्यादा जमीन देते, देहातोंमें ज्यादा लोग थोड़ी-थोड़ी देते। फिर भी गांवोंके साथ अुनका पक्षपात तो रहता ही। हिन्दुस्तानके लोग गांवोंमें ही बसते हैं और जो बातें हमें करनी हैं, वे ग्रामीणोंकी दृष्टिसे ही करनी हैं। अगर गांवोंके लोग कमजोर रहे, तो सारा देश कमजोर रहेगा, और गांवोंके लोग बलवान बनेंगे, तो सारा देश बलवान बनेगा।

पंवारामें प्रार्थना-सभामें विनोबाजीने कहा, "अब चुनाव हो गये हैं। अब गरीबोंकी सेवामें हम सबको मिलकर लग जाना चाहिये। हमें यह दिखा देना चाहिये कि राजनीतिमें विभिन्न विचार रखते हुअे भी भूदान-यज्ञमें सब मिलकर साथ काम कर सकते हैं। अिस कामके जरिये हम यह बता सकते हैं कि हम सब मिलकर अेकसाथ काम कर सकते हैं। समाज जिसे चाहे चुने, पर हम कार्यकर्ता अेक-दूसरेको नहीं छोड़ सकते। मैं जगह-जगह अिस बातको समझा रहा हूं। भूदान-यज्ञके कार्यक्रम द्वारा यह अेकता कायम रखना संभव है। सबके सहयोगसे यह कार्य बन सकता है और सब पक्षोंकी भलाअी भी अिसीमें है।"

अेक दूसरी दृष्टिसे भी यह समय कसौटीका रहा। यात्राके दरमियान तराअी प्रदेशमें से हमें गुजरना पड़ा। हिमालयको छूकर कअी जगहोंसे हमें निकलना पड़ा। गंगा और यमुनाके शीतल सुखदाअी परसका अनुभव करते हुअे यात्री लोग बढ़े चले जाते थे। लेकिन फिर भी मौसम ठंडका था, अिसलिअे अुससे बचनेका खयाल सदा रखना पड़ता था। अेक भाअी तो निमोनियासे बीमार भी पड़ गये थे; परमात्माकी करुणा थी कि वे अच्छे हो गये और यात्री-दलमें फिर आकर मिल गये। अिसी बीच वह साअिकल दुर्घटना हो गयी, जिसका जिक्र पहले आ चुका है। पहले दो-चार दिन तो विनोबाजीको केवल कमरमें ही विशेष दर्द मालूम हुआ, पर बादमें घुटनेमें जोरोंका दर्द शुरू हो गया और चलना कठिन हो गया। साथियोंके आग्रहसे काशीपुर तक आरामकुर्सी पर गये। लेकिन गर्दसे भरे रास्ते, सबेरेकी ठंडमें नदियोंको पार करना, अूबड़-खाबड़ रास्तों पर चलना; अिस सबका परिणाम यह हुआ कि विनोबाजीने आरामकुर्सी छोड़कर बैलगाड़ी पर चलना निश्चित किया।

तो जैसा कि हमने शुरूमें कहा, यह काल वास्तवमें कसौटीका काल था। अेक तो अिस दृष्टिसे कि विनोबाको यह साअिकल दुर्घटना हो गअी और दूसरे यह कि अिन तीन महीनोंमें कार्यकर्ताओंको भूदान-यज्ञका कार्य करनेके लिअे समय ही नहीं मिला। कअी जिलोंमें अुस-अुस स्थानके अेक या दो खादी-कार्यकर्ताओंको अेकाकी सारी यात्राका प्रबंध करना पड़ा। भूदान मांगनेके लिअे गांव-गांव हो आना तो दूर, जहांसे विनोबाजी गुजरते थे वहांके लोगोंसे मिलने और अुनसे भूदान प्राप्त करनेके लिअे भी पर्याप्त शक्ति कार्यकर्ताओंके पास नहीं रहती थी। जो कुछ भूदान मिलता, वह प्रायः स्वयंस्फूर्त होता। विनोबाकी वाणीकी नम्रता, दृढ़ता, दार्शनिकता, अद्भुतता अेवं हार्दिकताके कारण मिलता। लोगोंको महसूस होता कि हमें ठीक राह दिखानेवाला, हमारा कल्याण चाहनेवाला और अेक बड़े संकटसे हमें बचानेवाला कोअी आया है, जो 'अेक नये ढंगसे' दुनियाको बदल देना चाहता है।

जो जमीन मिली है, अुससे अिस कामके बारेमें आम जनताकी सहानुभूतिका अच्छा दर्शन मिलता है। दिल्लीसे चलने पर मेरठसे सीतापुर तकके अुन्नीस जिलोंसे कुल २८,३०८ अेकड़ जमीन मिली, कमसे कम रामपुरसे ९२ अेकड़, अधिकसे अधिक पीलीभीतसे ११,३२६ अेकड़। कुल दाता १७४६।

तेलंगानाका औसत दो सौ अेकड़ फी रोज पड़ा, वर्धासे दिल्ली तकका ढाअी सौ और दिल्लीसे सीतापुर तकका ३१५। फी दाताका औसत पहले १२ था, अब १६ हुआ। अुन्होंने हर रोजके भूदानका जो हिसाब लगाया था, अुससे तो यह औसत अभी दसवां हिस्सा भी नहीं था। और यात्राके दरमियानके गांवोंसे सहज भावसे जो कुछ मिल जाता वही था। विनोबाने जगह-जगह अिस बातकी ओर सबका ध्यान आकर्षित किया था।

अिस यात्राके दरमियान हर रोज लोगोंकी सद्भावनाका जो दर्शन मिलता, छोटे-छोटे लोगोंके द्वारा जो महान दान मिलता, अुस सबका वर्णन स्थानाभावके कारण यहां देना असंभव है। अैसे सारे प्रसंगोंकी अेक स्वतंत्र पुस्तक ही बननी चाहिये। कोअी दिन अैसा नहीं गया, जिस दिन कमसे कम अेक-दो अद्भुत घटनायें न घटी हों। चौदहपुरमें प्रज्ञाचक्षु रामचरण चौधरीका किस्सा पहले दे चुका हूं। वे अपनी गाड़ी पर सवार होकर करीब १ बजे रातको हमारे डेरे पर पहुंचे। विनोबाजी जग न जायं, अिस खयालसे यात्री-दलके भाअीने रामचरणसे धीरेसे बात की और रातको आनेका कारण पूछा। रामचरण अपने साथीका सहारा लेकर बैठ गये और कहने लगे, "मैंने सुना है महाराज भूदान लेते

हैं और गरीबोंको जमीन बांटते हैं। मेरे पास कुल बारह बीघा जमीन है, जो मैं महात्माजीको देना चाहता हूं।"

हम लोगोंने दानपत्र लिख लिया। रामचरण छः मील दूर अपने गांवके लिअे रवाना हो गये। सबेरे विनोबाजीको यह किस्सा सुनाया गया। प्रार्थना-सभामें अिसका अुल्लेख करते हुअे अुन्होंने कहा कि रातको रामचरण नामक अेक भाअी अपने बारह बीघेका सर्वस्व दान दे गया। लोग कहते हैं कि रामचरण अंधा था। परन्तु वास्तवमें अंधे हम हैं, जिनकी समझमें नहीं आता कि रामचरणके रूपमें प्रत्यक्ष भगवान रामके चरण ही अिस भूदान-यज्ञको आशीर्वाद देनेके लिअे आये थे।

दूसरी अेक नैनिताल जिलेकी बात है। कालाडूंगी नामके छोटे देहातमें अुस दिन हमारा पड़ाव था। पासके किसी गांवमें अेक बुढ़ियाने सुना कि बाबा गरीबोंके लिअे जमीन मांगते हैं। अुसकी कुछ जमीन पहाड़में थी, कुछ तराअीमें। वह चली और ग्यारह बजे पड़ाव पर पहुंची, तो सबको सोया हुआ पाया। सबेरे जागनेकी घंटी बजाकर मैं जब बाहर आया, तो दरवाजे पर बुढ़ियाको बैठी हुअी पाया। पूछने पर मालूम हुआ कि तराअीकी ग्यारह अेकड़ नाली जमीन और अेक मकान अिस यज्ञमें अर्पण करनेकी भावनासे वह आयी है। दानपत्र भरवानेका रसम पूरा कर लिया गया। अुस बुढ़ियाने हम सबकी श्रद्धाको दृढ़ करनेके लिअे अुस दानके रूपमें मानो अेक पाथेय ही सौंपा। अुस दानके कारण हमने अपने भीतर जो महान बलकी अनुभूति पायी, अुसको शब्दोंमें कैसे बयान करें?

करहल अेक छोटासा गांव है। यहांका प्रोग्राम अेकाअेक तय हुआ था, क्योंकि अगला मुकाम अिटावा बहुत लम्बा पड़ता था। यहां अेक भाअीने अपनी सारी यानी चार अेकड़ जमीन दे दी और अपना नाम प्रसिद्ध करना नहीं चाहा। अुससे प्रेरणा पाकर अेक भाअीने, जो पांचका अिरादा कर रहा था, दस अेकड़ दी। दूसरे अेक भाअीने ग्यारहका अिरादा किया था, किन्तु बीस अेकड़ दिये। शामको भोजनसे लौटते समय अेक भाअी मिले। वे प्रवचनमें नहीं आ पाये थे। परंतु ज़मीन देनेका अुनका अिरादा था। अपनी दुकान बन्द करके घर जा रहे थे। बड़ी श्रद्धापूर्वक लौटे। बहीखाता निकालकर जमीनकी तफसील बताअी और अपनी सारीकी सारी दस अेकड़ जमीनका दानपत्र लिख दिया। अिस छोटेसे गांवमें ६०-६२ अेकड़ हो गये।

अिटावाके जिला बोर्डके अध्यक्ष ठाकुर रघुनाथसिंह सारे जिलेमें हमारे साथ रहे। गांधी-स्मरण-दिनके रोज अिटावामें विनोबाजीका प्रार्थना-प्रवचन समाप्त हुआ। रघुनाथसिंह बोलनेके लिअे खड़े तो हो गये, पर बड़ी मुश्किलसे बोल पाये। आंखोंसे धाराअें बहने लगीं। "विनोबाजी, हम दो भाअी हैं। दस अेकड़ जमीन है। सारी जमीन आपको अर्पण है। हमारे अुदर-निर्वाहके लिअे आप जितनी अुचित समझें, हमें प्रसादरूप देनेकी कृपा करें।"

'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः। ये विशिष्ट दानके कुछ नमूने हैं, जिन्होंने अिस आन्दोलनका नैतिक बल अनेक गुना बढ़ा दिया। मुझे यह फेहरिस्त अधिक नहीं बढ़ानी चाहिये। आज दस माहसे अधिक हुअे, अैसी सैकड़ों अद्भुत घटनाओंका मैं खुद साक्षी रहा हूं।

पीलीभीत जिलेमें पूरणपुर तहसील है। अिस तहसीलके शेरपुर नामक गांवमें तीन मुसलमान भाअियोंने ढाअी ढाअी हजार अेकड़ दिये। शारदा नहरके किनारे साढ़े सात हजार अेकड़का पूरा अेक प्लॉट ही अुस रोज दरिद्रनारायणके लिअे मिला। पूरणपुर तहसीलमें कुल १० हजार अेकड़ हुअे। पूरणपुरके लोगोंने विश्वास दिलाया कि वे पचीस हजार अेकड़ कर देंगे। गणित-प्रेमी विनोबाजीने गणित शुरू किया: "हिन्दुस्तान भरमें कुल दो हजार तहसीलें हैं। पांच करोड़ अेकड़की मांग मैंने सारे देशके सामने रखी है। अगर हर तहसीलसे पचीस हजार अेकड़ हो सके, तो पांच कोटीका लक्ष्य सहज ही पूरा हो जाता है। और अगर पूरणपुर तहसील पचीस हजार पूर्ण कर सकती है, तो दूसरी तहसीलोंके लिअे यह क्यों असंभव होना चाहिये?"

अुझानीमें अेक बहनने अपनी छः गांवोंकी सारी जमीन दे दी, जो पांच-छः हजार अेकड़से कम नहीं होगी।

दिल्लीके बाद डाक और तारसे भी काफी दान मिलता रहा। हिन्दुस्तानके हर सूबेसे आता रहा। सौराष्ट्र, गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्र, कर्नाटक और पंजाब तकसे। मध्यप्रदेशके अेक नौ वर्षकी अुम्रके बालकने पंडित जवाहरलालजीको अुनकी बरसगांठके निमित्त साठ अेकड़ जमीनका दानपत्र भेजा। (सर्वोदय, मार्च '५२, पृष्ठ १३६४ पर यह मूल पत्र छपा है।)

बंगलौरके अेक मुसलमान भाअी जनाब सैयदहुसेनने अपनी अेक हजार अेकड़ जमीनका दानपत्र पूज्य राजेन्द्रबाबूके पास अुनके जन्म-दिनके अवसर पर यह कहकर भेज दिया कि विनोबाजीको अुत्तर भारतमें ही जमीन मिल रही है। दक्षिणके भूदानका आरंभ करनेकी दृष्टिसे मेरी यह भेंट विनोबाजी स्वीकार करें।

मध्यभारतके श्री गंगासिंह नामक अेक जागीरदारने कमसे कम अेक हजार अेकड़ देनेका पत्र लिखा है और बड़ी नम्रतासे कहा है कि आप किसी भाअीको भेज दें, ताकि वह जैसी जमीन चाहें पसन्द कर लें।

अिस भूमिदान-यज्ञमें जगह-जगह समाजवादी मित्रोंने सक्रिय हिस्सा लिया। भूदान दिया। प्रचार किया। साथ भी रहे। हर तरहसे सक्रिय सहानुभूति प्रगट की। कुछने तो कहा भी कि विनोबाजी, आप तो हमारा ही काम कर रहे हैं। परंतु लोगोंको अचंभा तो तब हुआ, जब मैनपुरी जिलेके कम्युनिस्ट नेता श्री बाबूराम पालीवालने भी अपने गांवके नजदीक विनोबाजी कलेवेके लिअे रुके, तब न सिर्फ दो अेकड़ जमीन दी, बल्कि सहयोगका आश्वासन भी दिया।

अिन सब अुदाहरणोंसे यही सिद्ध होता है कि जिसने विनोबाजीको मांगनेकी प्रेरणा दी है, वह औरोंको देनेकी प्रेरणा भी दे रहा है। बालकके जन्मके साथ अुसके भोजनका प्रबंध करनेवाले योजकके लिअे क्या असंभव है? जरूरत सिर्फ निष्ठापूर्वक बढ़ते जानेकी है।

दा० मूं०

गांधी और साम्यवाद

[श्री विनोबाकी भूमिका सहित]

लेखक: **किशोरलाल मशरूवाला**

कीमत १-४-० डाकखर्च ०-४-०

विषय-सूची

		पृष्ठ
मद्रासका प्रयोग	महादेव देसाअी	६५
अेक हानिकारक प्रस्ताव	मगनभाअी देसाअी	६६
सर्वोदय यात्रा: सिंहावलोकन	ना० रा० सोवनी	६७
भूदान-यज्ञका सन्देश	तन युन शान	६७
सर्वोदयकी राजनीति	कि० घ० मशरूवाला	६८
राम-जन्म	विनोबा	६९
सहयोग और सर्वोदय	मगनभाअी देसाअी	६९
विनोबाकी अुत्तर प्रदेश यात्रा — १	दा० मूं०	७१
टिप्पणियां :		
राष्ट्रपतिका चुनाव	कि० घ० म०	६८
पत्रोंकी ग्राहकसंख्या	जी० देसाअी	६८